रास्ते में मिली एक लडकी

शहर के नेहरू हॉल में प्रसिद्ध रचयिता और अध्यापक मनु सत्यवाल का एक भाषण था। प्रोफसर सत्यवाल बहुत ज्ञानी है। उनका भाषण सुनने केलिए के बहुत सारे लोग आए। भाषण के बाद लोगों को प्रोफसर से सवाल पूछने का अवसर था। लोग इस भाषण के बारें में और बहुत सारे चीज के बारें में उस से पूछा और प्रोफरर के ज्ञान और कुलीनता को प्रशंसा किया।

वहाँ के लोगों में से एक लडका उनसे पूछा, "आप तो बहुत बडे ज्ञानी हो। आपका पहला गुरू कौन है?"

यह सुनकर प्रोफसर कुछ देर केलिए निशब्द रहा। जैसे कुछ सोच रहे थे। कुछ देर के बाद वह कहा

"मेरे पहले गुरू के बारें में किसी ने आजतक पूछा नही। मेरा पहला गुरू मेरे माता या पिता या किसी अध्यापक नहीं है।

वह एक लंबी कहानी है। क्या आप लोग
सुनना चाहते हो ?"
पूरे हॉल ने "हाँ और जी हाँ" कहा।
प्रोफसर सत्यवाल सबको देखा और बोला,
"ठीक है। में उस कहानी आप सबको सुनाती
हूँ। नीस साल पहले, जब में एक उन्नीस साल युवा था,
में अपने पापा के साथ रहते थे। मेरी माँ
मुझे दो साल होते ही मर ~~गया~~ गई थी।
पिताजी को किसी तरह का विद्याभ्यास न
मिला। वह एक किसान था। स्कूल न जाने
पर भी पिताजी एक ज्ञानी थे। वह मुझे ~~स्कूले~~
~~लेकर पठाई~~ स्कूल लेकर पढाई।
पिताजी अपने मनु को एक टीचर बनाना
चाहता था। पिताजी को पता था की एक
अध्यापक समाज में कितना माननीय है।
एक अध्यापक बनने से एक आदमी बहुत
ज्ञान प्राप्त करते है और दूसरों को भी अपना ज्ञान
देना देते है। और बहुत कुछ सीखने का
अवसर है। शायद एक अध्यापक पूरे दुनिया

को भी बदल सकते है। पितानी इतना सब मुझे हर रोज बनाते थे। लेकिन मुझे नही बनना था एक टीचर। मुझे अपना खुद का दुकान खोलना था। छोटा दुकान खोलकर पैसा मिलते ही एक बडा दुकान खोलना था, और शहर के सबसे बडे दुकान का मालिक बनना था। बचपन से ही मैं यह चाहता था। पहले मेरे पितानी ने सोचा की मैं सिर्फ मजाक कर रहा था। पर जब मैं उन्नीस साल का हुआ, तो मैं पितानी से कहा की मैं अध्यापक बनना नही चाहता। पहले पितानी ने मेरे दुकानदार बनने की आशय को से खुश नहीं थे। लेकिन अंत में वह मेरी आशा को "ठीक है" कहा। मैं बहुत खुश हुआ। मैं खुद का अपना दुकान शुरू किया, जहाँ सब्जी, स्टेशनरी सब बेचते थे। पितानी फिर भी दुखी थे। मेरे दुकान के मालिक होने के पीछे अमीर होने की आशा था। अध्यापक बनने से भी ज्यादा पैसा बडे बडे

दुकानें के मालीक बनने से मिलने है।
दुकान खोलकर चार महीने के बाद पिताजी
बीमार हो गए। दवाई के लिए हमारे पास
का पैसा अवश्य नहीं थे। दवाई के केलिए
हमारे पास का सामान बेचा, और लोगों से
माँगा। दुकान से मिलनेवाला पैसा बहुत कम थे।
दवाई लाने पर भी पापा नहीं बचा। मुझे अकेला
छोडकर वह भी गए। लोगों से जो पैसा माँगा
था, उसे वापस देने के लिए हाथ में एक पैसा
भी नहीं थे। ~~तब~~ अंत में अपना दुकान को
बेचना पडा। दुकान नहीं। पैसा नहीं। साथ
कोई नहीं। अब क्या करें, पता भी नहीं।
एक ही रास्ता सोचा। माँ और पिता के पास
जाना। धरती छोडकर। हमारे गाँव में एक
अ ऊँचा ब पर्वत है। नीचे बडी खाई।
मैं वहाँ से कूदकर अपने जिंदगी खत्म
करने को सोचा। तो मैं चला, बिना
किसी को बताए। ~~पहाड के नीचे~~
पहाड के रास्ते में एक खेत है। मैं मेंढो पर चल

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

चल रहे थे। तब बीच में एक छोटी लडकी खडे थे। मेरी आने की अवाज सुना नहीं होंगी, वह किसी दूर दिशा देखते गाना गा रहे थे। मैंने उससे कहा "बच्ची, रास्ता दो मुझे जाना है। वह a मुझे देखा और कहा, "जाना है?" मैं ने कहा, "हाँ। अगर तुम रास्ते के बीच में ऐसे खडे हो तो मैं उस पार कैसे जाँए?" यह सुनकर रास्ता देने की सिवाइ वह ~~मुझ~~ मुझसे पूछा "क्यों जाना है, कहाँ जाना है?" मैं ने कहा दुकान जाना है। खेलना बंद करो और रास्ता दो"। a वह मुझे देखकर कहा, "लेकिन यहाँ तो कोई दुकान नहीं है।" अरे, फस गए। वह बोली, "तुम ने झूठ बोला। मैं नहीं हटनेवाली।" मुझे गुस्सा आने लगा। और कोई रास्ता नहीं है। उसने यह समझकर कहा, "हो देखो भाई, गुस्सा होकर कोई फायदा नहीं।"

मैं ने दोस्तों के साथ खेलकर हार गया। मुझे भी सबसे गुस्सा है। मैं इसीलिए किसी को रास्ता नही देने की सोचा है।"

यह सुनकर मुझे हँसी आई। वह खेल में हार होने पर बाकी लोग क्या किया? मैं ने उससे कहा, "देखो, तुम खेल में हार गए, तो बाकी सब क्या किया? इस सडक सब लोग के लिए है और छोटे भी। तुम रास्ते के बीच में ऐसे खडे हो तो लोग कहाँ से जाएँगे? सब लोगों के बारें में सोचो। यह सुनकर वह कुछ कहाँ नही, मुझे एक और बारें देखकर भाग गया। भागते वक्त मेरी और देखकर चिल्लाया, "आप ज़रूर एक अध्यापक हो"।

यह सुनकर मैं कुछ देर वहाँ ही रहा। मेरी बाद किसी ने माना। और मैं उससे क्या कहा, उसके बारें में भी सोचा।

जिंदगी एक खेल है। कभी जीत होता है और

कभी हार। मैं क्यूँ डरूँ और जीवन का अंत करूँ ?" मैं वापस घर गया और फिर पढ़ाई शुरू किया। फिर एक अध्यापक बना ज्ञान प्राप्त किया।